Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research (U.I.J.M.S.R.)
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact Factor - 4.8, Open Access, Double Blind
Monthly Online Journal, ISSN : 2581-8872, Vol. : 4, No. : 6, July - 2022

2022

सुनीति रावत के कविता संग्रह 'सुन मिताली' में व्यक्त कथ्य

डॉ. मलकीयत सिंह
सहायक प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, धर्मशाला, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

आधुनिकता और उत्तराधुनिकता के पारिभाषिक विमर्श के सधे रास्ते पर अल्हड़ स्वभाव से बहती हुई काव्यधारा कहाँ विखंडित हो गई, या कितनी ही उपधाराओं में विभाजित होकर भाव भूमि को सिंचित करती हुई असंख्य रूपों में प्रस्फुटित हुई इसका सही-सही विश्लेषण करना आसान नहीं है। या कहें कि आधुनिक काल की कविता साठोत्तरी कविता तक अविरल रही लेकिन इसके उपरांत वह जिन रूपों में विभाजित हुई उन्हें एक वाद या आंदोलन की परिभाषा में न बांधा जा सका। बाधा भी कैसे जाता विषयों की अधिकता ही इतनी थी या नवीनता इतनी थी कि यह संभव न हो सका। साहित्यकार ऐसे में समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत रूप से लेखन के आधार पर मूल्यांकित होने लगे जो साहित्य की समृद्धि हेतु एक सुखद आचर्य भी है। कविता की दृष्टि से देखे ता इसे स्वातंत्र्योत्तर काव्य को साठोत्तरी, सातवें, आठवें, नवें दशक, सदी के अंत की कविता, एवं 21वीं सदी की कविता आदि कह कर संबोधित किया गया जो सूचना और संचार के भयंकर बदलाव के समय में भी अपने मृदु भावों को जीवित रखने में सफल रही। [1]

डॉ. सनीति रावत भी ऐसे ही समय की कवयित्री हैं जो अपनी अनुभूतियों को बड़ ही सूक्ष्म रूप से कविता में ढालने में सक्षम रहीं।

परिचय : डॉ. सुनीति रावत मूलतः उत्तराखण्ड की रहने वाली है जिनका जन्म 18 अप्रैल 1946 में उत्तरांचल में हुआ। कृतित्व पर नज़र डाले तो इनके सीमारेखा (उपन्यास), रंगशाला, अनूठे अनुबंध (कहानी संग्रह), गीत-निकुंज, 'छुपे मकरंद', सब रंग पलाश (कविता संग्रह), डोलते अक्स (नज्म) हैं। इनको 'घरौंदा' कहानी संग्रह पर साहित्य अकादमी से पुरस्कार 1 प्राप्त हुआ।

आप अखिल भारतीय लेखिका संघ से भी जुड़ी हैं एवं पत्रिका के संपादन में सहयोग भी दे रही है।

सुनीति रावत का कविता संग्रह 'सुन मिताली' 2008 में 'अंश प्रकाशन' दिल्ली से प्रकाशित हुआ, जिसमें 65 कविताएँ संकलित हैं जो जीवन के छोटे-छोटे विश्वास, प्रकृति, पनघट, चिड़िया, क्षणिकाओं, संघर्ष, स्वगत, स्वानुभूति, यथार्थ अनकहा सत्य, चाहत, कामना, प्रेम आदि कई भावों से समुन्नत है। इनकी कविताएँ पढ़ते हुए एक आत्मीयता और ईमानदारी का साया सा साथ-साथ चलता है, जो कही न कहीं संवेदनात्मक जुड़ाव में सहायक सिद्ध होता है।

'सुन मिताली' कविता संग्रह पढ़ते हुए कहो ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उन्होंने जबरन किसी विषय पर लिखने का प्रयत्न किया है बल्कि यहां कविता स्वतः ही सहज रूप में प्रस्फुटित होती दिखाई देती है।

'सुन मिताली' कविता संग्रह के कथ्य के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं

अस्तित्व की खोज : वर्तमान जीवन की तेज़ दौड में भी अपने अस्तित्व और छोटे-छोटे विश्वासो, घटनाओं, टूटन आदि को कवयित्री ने अभिव्यक्ति दो है, जिनके लिए 'फास्ट 100' समाचार के युग में ठहर कर सोचने के लिए समय नहीं है। उनकी अनित्य, मोमबत्ती, ज्वारभाटा, सलीब, अंगार, आदमी, एकाकी, कस्तूरी, शहर और गांव के बीच, ऐसी ही कविताए ह, जिनमें कवयित्री ने आंतरिक संघर्षों को भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। पीडाजन्य अनुभूतिया जब चाहकर भी यादों से मिटती नहीं तो कवयित्री 'कांच' कविता में कहती है:[1]

"दिखाई दे जाते हैं वे बिम्ब जिन्हें मिटाने के लिए सौ बार धुलता है कांच"

"और आहत हो जाता है। उनका मन जब मिटता नहीं कुछ भी न अस्तित्व, न बिम्ब, न बिन्दु तब टूट कर बिखरने लगता है कांच सा कुछ।

गृहस्थी की मोमबत्ती की तरह जलकर रोशन करती सभी रिश्तों और समाज के लिए समय देती, किसी की छोटी सी खुशी के लिए भी अपनी बड़े सपनों की बलि देने वाली स्त्री के त्याग को कोई सराहता नहीं है। उसे अपना अक्स मोमबत्ती में दिखाई देता है। वह कहती है

"अन्तिम भभक लेकर जाने कब बुझ गई / एक शोकाकुल सी धूए की लकीर उठी/और विलीन हो गई फिर / किसी ने खुरच दिए / अन्तिम अवशेष भी ढूंढने लगा वह एक नई मोमबत्ती/ घर रौशन करने के लिए।"[2]

मानव मन की संवेदनाओं, आवेगों, ताप, संताप और भावनाओं को सिंधु के ज्वार-भाटा से जोड़कर प्रस्तुत करना बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है । कवयित्री कहती हैं कि जिस प्रकार सागर में समय-समय पर ज्वार और भाटा आता है उसी प्रकार मानव मन में भी वेदनाओं का उतार-चढ़ाव आता है जो होंठों रूपी किनारों से टकरा कर शांत हो जाता है। कविता की अंतिम पंक्तियां दृष्टव्य है

"यही हर बार होता है डोलता जब सिंधु घट में ज्वार की उठती लहर और भाटा उतरता है क्रम निरंतर मौन? क्रन्दन देहधारी बहुत कातर झेलता है ज्वार भाटा प्राण पर 13 बस प्राण तक।"

सामाजिक बंधनों की आड़ में जब किसी को दमित किया जाता है तो वह प्रभू ईशू की सलीब से कम कष्टकारक नहीं हाता है ऐसे ही भावनाओं का दमन की कवयित्री को कष्टकारी प्रतीत होता है। वे कहती है।

"झोंक दी जाती है कोई देह भट्टी में/ काम की, क्रोध की, लोभ की, मोह की / हंसते हैं वे/ विगलित होता मन/ देखता है सब छोड़ता नहीं ...../ गाढता जाता है कील निरंतर। मन पर मस्तक पर, देह टूटने लगती है/ तब छटपटाता है आदमी। अपनी ही सलीब पर 'अंगार' कविता में कवयित्री मानव स्वभाव और स्थायी भावों को नई अभिव्यक्ति देती है। वे कहती है शांत व्यक्तित्व के भीतर छिपे रहते हैं अंगार जो बाहर में नज़र नहीं आते है। शायद यही भावनाओं का उद्वेलन है जो मानव को जीवित और संघर्षशील रखता है और क्रांति पैदा करता है। कवयित्री कहती है।"[4]

"छेड़ो नहीं ...../ अस्तित्व को, अंह को, प्रेम को बंधुत्व को/ आदर्श को, भाव को, सत्य को क्योंकि/ इन सबके पीछे रहती है वह धौंकनी/ जिसकी मूठभर छू जाने से। भभकने लगती हैं हवाएं/ दहकने लगते हैं अंगार।"[5]

इसी प्रकार 'आदमी', 'एकांकी', 'कस्तूरी आदि कविताएं अस्तित्व को खोजती प्रतीत होती है या रिश्तों और सामान्य दायित्वों के आयोजन में भी फुर्सत के क्षणों में अपने को दर्पण में निहारती हुई प्रतीत होती है।!

ग्रामीण संवेदना : 'सुन मिताली' की भूमिका में सुनीता जैन कहती ह कि इनकी जो कविताएं अपनी पहचान बनाती हैं, वे कविताएं हैं-उनके गांव, परिवेश की, ऐसी कविताएं, जो सुनीता ने जी हैं और इसलिए सुनीति ही लिख सकती है। उनकी काफल का पेड़, डिढौना, गुड़िया, लुहार, पहाड़ो पर गोधूलि, बफ गिरने से पिघलने तक, हम तुम, भोर, मत जाना, पनघट आदि ऐसी ही कविताएं हैं जिनमें गांव की मधुर व्यार बहती दिखाई देती है

यहाँ राजस्थानी लुहार दम्पति के मेहनत करते और लोहे को पीटते वक्त धूल धूसरित जीवन में कोई शिकायत नही है बल्कि आपसी प्रेम है और लोहे की तरह ही संबंधों की मजबूती है। इस कविता को पढ़ते वक्त अनायास ही चेहरे पर संतोषजन्य हंसी तैर जाती है उनकी आपस की स्वस्थ ठिठोली मन को खूब भाती है और अंत में ऊंट का सिर घमाकर देखना वास्तव में ही सुंदर बन पड़ा है।

धधकता दिन/आग की तीखी लपट/चूर दोनों कि बदली छा गई/ मुस्कुराई, चूल्हा जलाया/ पेट पापी/ बाजरे और मोठ की खिचड़ा बनाया/ थपक दी थाल सी रोटी/ पुकारा/ हे घनी रोट खिचड़ो खा, मगर पैले वा भूसी उंट धीरे घर/ वह उठा फिर भसी धरी/ ऊँटगाड़ी पर, तान बरसाती/ पास आया, साथ निगले कुछ निवाले

मुस्कुराया/बजरियों थारो खीचड़ो, वामे डाल्यो मोठ, तातो तातो खा गयो बडग्यो म्हारो होंठ"/ वह हंसी/ घी गुड़ वाली/ रोटलो लाग्यों घणो स्वाद/ मैं गाड़ी चढ बैठली, घणी घोर बरसात/ पधारो जी, अब सुहाने रिम-झिम, में, धौंकनी सी साँस, ऊँट ने गर्दन घुमाई-सब ठीक ठाक" ---

इस भौतिकवादी समाज में बेशक आधुनिक सुख-सुविधाओं के सारे साधन उपलब्ध हो बावजूद इसके कवयित्री एक ऐसे द्वीप की परिकल्पना करती है जो हरियाली से लबालब हो, और वहां जाकर वह प्रकृति से कुछ ले कर अपना जीवन यापन करे और अपने वाली पीढ़ियों को उसी प्रकृति की गोद में पलता हुआ देखे वे कहती है

"चलो/ धरतो के किसी छोर पर खोजे/
हरियाली का एक द्वीप..... जहां, बहती दरिया
की कल-कल हो/ कि जिसमें उतर आते हो पशु
पक्षी/ साँझ के साये में प्यास बुझाने

इसी प्रकार गांव और हरियाली के माध्यम से व्यक्त 'काफल का पेड़ कविता इस सग्रह की एक सशक्त कविता है, जिसके साथ कवयित्री को मधुर 'यादें जुड़ी हैं लेकिन वह पेड़ अब सूखने लगा है उस पर वीरानी छाने लगी है। कवयित्री को संतोष है कि वह इस अवस्था में भी अपने खोखलेपन में पक्षियों को आसरा दे रहा है

'किंतु अब भी कुछ/ सुखी वीरान टहनियां/ पत्ते व फल; झरता हुआ काफल/ आंख भर आई, सहलाया तने को कि उभरी/ एक धीमी चर्र... चूं कोटर से/ एक कठफोड़ा/ मंडरा रहा था/ हंसी का एक कतरा, अधर पर आकर रूका, मन बोला/ दाता स्वयं ढलता हुआ, आज भी दे रहा आश्रय परिंदो को।"[8]

नारी संवदेनाः सुनीति रावत की कविताओं का एक सौंदर्य यह भी है कि उनकी चीजों को देखने को नारीवादी दृश्टिकोण है। अभिप्राय है कि कितनी ही घटनाओं वस्तुओ, व्यक्तियों, प्रांत, गांव, रिश्ते, स्वप्न, आंख को एक महिला आत्मसात और तटस्थ होकर देखती है तो वस्तुओं के पीछे का सच जैसे सारे आण्डम्बरो को खोलकर सामने आ जाता है। चाहे वे रिश्तों की डोर हो, दाम्पत्य जीवन हो, अस्तिववादी चिंतन हो, या कोई भी विषय हो। यहाँ विषय के पीछे जैसे कवयित्री के रूप में एक ममतामयी, सागर सी गहरी, स्निग्ध स्मिता लिए हुए बैठी हुई आदि शक्ति प्रतीत होती है जिससे बचकर कोई भी चालाकी, झूठ, आण्डम्बर, प्रकृति, प्रेम निकल नहीं सकता।

वे नज़र उतारने को लगाए गये 'डिठौने' को, 'घर छोड़कर भागे हुए लडके की वेदना, 'गुड़िया लुहार' की प्रेम उत्कण्ठा, कांच, टका तो टकटका, में नौकरानी के बदलते तेवर, दम्पति की यादें, ज्वार भाटा, सगन्ध, नींद, मानिनी, वह बच्चा आदि सब कुछ देख सकती हैं, जिसे हम कही न कही धुंधलके में देखते तो है लेकिन एक मुकम्मल तस्वीर नहीं बना पाते। कवयित्री ने यहां उन्हीं मानवीय दमित भावों को सक्षम अभिव्यक्ति दी है। कवयित्री कहती है कि वे इन अनुभूतियों से कभी स्वयं भी अलग-अलग नहीं रह सकती। 'सुगन्ध' कविता में वे कहती है

जैसे-मुट्ठी में बंद फूल
कुछ पलों के लिए छोड़ जाते हैं सुगन्ध साँसो में,
हथेलियों में,
नमी भी
वैसे ही... मन के कोने में बंद कुछ याद
दे जाती है मुस्कुराते अंधेरों को कुछ पल
आँखों में नमी भी "

ऐसा प्रतीत होता है कवयित्री हर वेदना, भाव को एक उत्सुक भोलेभाले बच्चे की तरह देखती है। वे बच्चा शीर्षक से कविता की पंक्तियां प्रस्तुत है

"वह नन्हा सा बच्चा.... मेरे अन्तर में,
मेरे मानस में मेरे अन्तर में समूची देह में
बसता है, हंसता है रोता है, गाता है मैं उसे पोषती हूँ
मां की तरह नित्य मां। जिसने मेरी शिशुदेह को
दुलारा संवारा गढ़ा। बनाया, बच्चों सा रहने
निष्पाप, निस्वार्थ ।[10]

जैसे बच्चे की हरेक हरकत को मां स्नेहशीलता, गंभीरता और आत्मसात रूप में देखती है उसी प्रकार, कविता में भी वे दिखाई देती है ।

ऐसा प्रतीत होता है कवयित्री हर वेदना, भाव को एक उत्सुक भोले भाले बच्चे की तरह देखती है। वे बच्चा शीर्षक से कविता की पंक्तियां दष्टव्य

"वह नन्हा सा बच्चा.... मेरे अन्तर में,
मेरे मानस में मेरे अन्तर में समूची देह में
बसता है, हंसता है रोता है, गाता है मैं उसे पोषती हूँ
मों की तरह नित्य मां। जिसने मेरी शि"देह को
दुलारा संवारा गढ़ा। बनाया, बच्चों सा रहने
निष्पाप, निस्वार्थ .[11]

जैसे बच्चे की हरेक हरकत को मां स्नेहशीलता, गंभीरता और आत्मसात रूप में देखती है उसी प्रकार कविता में भी वे दिखाई देती है। 'पनघट', प्याजरंगी बौ, चिड़िया का गीत, सुन मिताली, आदि नारी की गहरी समझ और परख को व्यक्त करती हुई कविताएं हैं। 'प्याज रंगी बौ, में देवर का भाभी क सौंदर्य के प्रति दैवीय आकर्षण को बड़ी ही संजीदगी से कवयित्री ने प्रस्तुत किया है

आई चूंघट में, रूप की रानी, झांझर झनकाती ठगे ठगे नैनो ने, देवर ने देखा, हंस कर बोला .
है बौ, मेरी प्याजरंगीबो, सुनकर वह खिलखिलाई
रत्न्याली आँखी, झप झप झपकेली
हे बौ, मेरी प्याजरंगी बौ,

इसी प्रकार नारी संसार उनकी आपसी अठखेलियाँ, और उनकी खुशी के राज, मुस्कुराहट और चपलता के कारण और उनकी भावनाओं को कवयित्री 'पनघट' कविता में प्रस्तुत करती हैंसुबह सवेरे, गांव के पनघट पर जमा होते बंडे (गगरिया)

कुछ पीतल, कुछ तांबे के, सूखी राख से रंगड़ती-मांझती हंसी ठिठोली करती बेटियां/ नन्द-सास के किस्से चटखारे भर-
भर -
सुनाती बहुए/ बीती रात की बातें फुसफुसाती नवेलियां/ धो-माँझ कर भरती गगरियों की आवाज/ एक के ऊपर एक बड्ढा रखे/ घरों को लौटती किशोरियां,/चमचमाती गगरियों पर/ फूटती किरणे/ और चटर-पटर चपलता, कितना सुन्दर लगता है।

प्रेम और समर्पण : सुनीति रावत की इस संग्रह के उत्तरार्ध की कविताएं प्रेम और समर्पण भाव से ओत-प्रोत है। यह समर्पण आत्मिक है। हृदय को गहराइयों के बसे प्रेम से पोषित जैसे अपने अनुभव, नारीत्व के ईश्वरीय स्पर्श से जैसे सब कुछ जानती है। उनकी आंखे सब कुछ देख लती है और एक अन्नत संवेदना से जुड़ जाती है। 'सुन मिताली' कविता में अपनी बेटी को चाहकर भी कुछ न बतला पाने की स्मिति में वह कहती है

वह अबोलापन/ जिसे तुम साथ ले आई/ बोलेगा तुमसे/ मन के सभी रंग/ खोलेगा तुमसे,
शब्द-दर-शब्द/ परत-दर-परत —
कई-कई बार/ सुन मिताली "[13]

इस संग्रह की 'मानिनी, सपना, विश्वास तुम चले गये, झरोखा, ये दिन, प्रेम, आदि इसी भाव को व्यक्त करती हुई कविताएं है। कवयित्री प्रेम कविता में कहती है,

इस छोटे से शब्द में सांसारिक उद्बोधन है। भावनात्मक जड़न भी अन्तर में झरता हर्ष भी, रूदन भी।"[14] तुम्हारी हँसी का एक कतरा/ छेड़ गया/ सोए हुए गीत की एक 'मानिनी' कवतिा में कवयित्री प्रेम में समर्पित हो जाने के भाव को व्यक्त करती है, तो वही 'सपना' कविता में बीते हुए प्रेम के क्षणों का स्मरण करके पुनः जी लेना चाहती है। वे कहती है कड़ी/ मन का कोना कोना/ रोम-रोम को देकर/ एक सरसराहट/ आँखों में हिलोर/ किन्तु/ इससे पहले कि/ मेरी उंगलियां छू/ ले मुस्कुराहट का नर्म फुहासा/ तुम ओझल हो गये/ मखमली पात से/ जैसे ओस की पहली बूंद"[15]

प्रेम और समर्पण के वे क्षण जब बीत जाते हैं तो वे कहीं न कहीं हृदय म किसी कोने में याद बनकर रह जाते हैं और उपयुक्त वक्त देखकर पुनः जीवित हो उठते हैं। मधुर यादें अब कहीं न कहीं आसुओं से नाता जोड़ लेती हैं। ऐसे में लिखी हुई कविता अपने समय की आपाधापी और तज़ दुनिया से अलग जैसे अपने अन्तमन में ही घटित होती है। जहां छायावाद सरीखी रहस्यवादिता है और गहराई है कविता या तुम चले गये दृष्टव्य है

तुम गये, मुंडेर पर एक कत्तरा धूप छोड़ कर, धूप से कैसे कहूं कि ...../ देह के भीतर./ गर्माना नहीं चाहता/ देह का क्या, मन से अनुबंधित, और मन ../ उसके हिस्से का कुछ गुनगुनापन तुम ले गए"[16]

कवयित्री अवचेतन मन में भी अपने प्रिय के प्रति चिन्तनरत है और एकांत में भी जो कुछ देखती सुनती है या अनुभव करती हे उसे प्रिय के लिए संजोकर रखना चाहती है। वे कहती है

मैं बटोरना चाहती हूँ / कुछ अनोखापन/ एक खिलती हंसी/ एक रंगभरी कहानी/ एक अनछुई कविता/ एक सुन्दर सा दृश्य / कि जब कभी तुम मिलो तो तुम्हे सुनाऊं सारी विचित्रता/ ताकि ...../ तुम्हारे चेहरे पर खिलें/ मुस्कुराहट के फूल/ खिलकर खिलखिलाहट बने/ और मैं समेट लूँ,

तुम्हारी हंसी की गुंजार/ मन के किसी कोने में"[17]

1 चिड़िया का गीत, इस संग्रह की एक सशक्त कविता है, जिसमें सृजन के ईश्वरीय नियम को निभाती हुई, चिड़िया के गीत है जो अपने अंडो, बच्चों की रक्षा करती है उसे लगातार खिलाती है। बच्चों को खिलाने की धुन में वह खुद भी नहीं खाती है। कवयित्री पूछती है कि बस क्या तुम उन्हें इसलिए खिला रही हो कि एक दिन ये आसमान में उड़ जाएं या तुम्हारी कुछ अपेक्षाएं है वे कहती है

एक दिन पूछा उसे/ नन्ही चिड़िया, इन्हें पाल पोस कर उड़ा दोगी क्या?

उपकार के बदले कुछ न लोगी क्या? वह गाने लगी, अरी बावरी मैं मां हूँ जन्मदायिनी

उपकार कैसा? वे मेरे बच्चे है कल उनके हों पाले, सृष्टि का नियम, लेना देना कैसा? गाती हुई चिड़िया, फुर्र से उड़ गई

फिर वही गीत चिड़िया का
में दिन भी गुनगुनाती रही"[18]

इस संग्रह की समस्त कविताएं अपने आप में एक कथानक हैं अपने आप में संपूर्ण है। इनमें जो भी भाव उठाए है वे अभिव्यक्ति की कशलता से अधिक ग्राह्य बन गये है और देर तक याद रहने वाले हैं। यहां कवयित्री एक साथ भूख से लड़ने वाले बच्चे, गरोबी में भी मां द्वारा बच्चे को डिठोना, पहनाने को देख लेती है ओर अभिव्यक्त कर देती है।

इस कविताओं की भाषा भी समय परिस्थिति और भाव के अनुसार ढल जाती है। कवयित्री ने आम बोलचाल की भाषा में सहज अभिव्यक्ति भी हैं, 'गुड़िया लुहार' कविता में राज्यस्थानी परिवार की हंसी ठिठोली भाषा के उचित प्रयोग से ही रमणीय बन पड़ी है। उनकी काव्य में ध्वन्यात्मकता है 'काफल का पेड़' डिठोना, टका तो टकटका, बर्फ गिरने से पहले, प्याजरंगी बौ, लाडली का कन्हैया एक लड़की सलौनी सी, चिड़िया का गीत, बिनसर आदि कविताओं में भाषा की सहज चमत्कार देखने को मिलता है।

'सुन मिताली' कविता संग्रह की भूमिका में सुनीता जैन लिखती है, सुनीति रावत की अब तक की कविताओं में भाषा का सहज सौश्ठव मुझे आकर्षित करता रहा है। 'सुन मिताली' तक आते-आते सुनीति रावत ने अपनी भाषा के लिए एक ठोस धरातल खोज लिया है। संग्रह के प्रारंभ स ही कविताएं इस बात को प्रमाणित करती है। सुनीति का कवि मन पूरी सजगता से अपने परिवेश से प्रभावित व जुड़ा है।" (वही भूमिका)

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि 21वीं शताब्दी में जहां भौतिक जगत तीव्र विकास ओर सूचनाओं की वमवर्षा से गुजर रहा है जहां विचार हेत समय नहीं हैं वहां पर इस तरह के कविता संग्रह की जड़ों की ओर लौटने का प्रयत्न यह प्रभावित करता है कि मानव अभी तक अपने परिवेश से पूर्णत कटा नहीं है उसमें वह संवेदनात्मक स्तर पर अभी भी शेष है जो सुखद प्रतोत होता ह। मुझे लगता है कि यह कविताएं व्यक्तिगत अनुभूति से उपर उठकर सामाजक अनुभूति बनने हेतु पूरी तरह से सार्थक है।

संदर्भ सूची ग्रंथ/आधार ग्रंथ सूची -

1. **सुनीति रावत**, **सुन मिताली**, **पृष्ठ**-29
2. **वही**, **पृष्ठ** 37
3. **वही**, **पृष्ठ** 39
4. **वही**,
5. **वही**,
6. **वही**, **पृष्ठ** 40
7. **वही**, **पृष्ठ** 40
8. **वही**, **पृष्ठ** 21
9. **वही**,
10. **वही पृष्ठ**-50
11. **वही**,
12. **वही**,
13. **वही पृष्ठ**-84
14. **वही पृष्ठ**-105
15. **वही**, **पृष्ठ** 109 **पृष्ठ**-90 **पृष्ठ**-85 **पृष्ठ**-117 **पृष्ठ**-90 **पृष्ठ**-90
16. **वही**, **पृष्ठ** 112
17. **वही**, **पृष्ठ** 86
18. **वही**, **पृष्ठ** 7
19. **सुन मिताली**, **सुनीता जैन**
20. **आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रकृतियाँ**, **नगेन्द्र**
21. **पंजाब की समकालीन हिन्दी कविता**, **डॉ. हुकुमचंद राजपाल**
22. **साठोत्तरी कविता में लोक सौन्दर्य**, **श्रीलाल शुक्ल**
23. **साहित्य के सरोकार**, **डॉ. हरमिंदर सिंह बेदी**